Bodhi-Path Year 2020 July Issue Volume 19 Page No 66-70

कनिष्क के स्वर्ण सिक्कों पर ईरानी प्रभाव

सुमन कुमारी
षोध छात्रा
प्रा0 इ0 सं0 एवं पुरातत्त्व विभाग,
नव नालन्दा महाविहार
(मानित विष्वविद्यालय)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
नालन्दा 803111
sumankumari1452@gmail.com

मानव सभ्यता का इतिहास एवं विकास का अत्यंत प्राचीन इतिहास है। प्रारंभिक युग में मनुष्य कि खानाबदोसी प्रवृति के साक्ष्य मिलते है, भौगोलिक एवं अन्य प्राकृतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप मानव विकास की ओर अग्रसर हुआ और अपनी आवष्यकताओं के अनुरूप एक स्थिर सामाजिक संगठन के सदस्य के रूप में विभिन्न प्रकार के आविष्कार एवं प्रयास प्रारंभ किया। सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्यों की आवष्यकताओं एवं इच्छाओं में वृद्धि हुई, जिसकी परिपूर्त्ति हेतू उसने विभिन्न संसाधन का प्रयोग प्रारंभ किया। वस्तु–विनिमय प्रणाली भी इसी विकास–क्रम की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रतिष्ठापित हुई, जो कालांतर में मुद्रा के प्रचलन के रूप में मनुष्य की आवष्यकताओं एवं जीवन–स्तर के विकास–क्रम में सहायक हुई।

जिस काल में भारतीय समाज में मुद्रा के रूप में धातु का प्रयोग हुआ उस समय इसे एक पिण्ड के रूप में अदान–प्रदान का माध्यम बनाया गया। वैदिक साहित्य में 'सुवर्णचुर्ण' और 'हिरण्यपिण्ड' का उल्लेख मिलता है, क्योंकि परीक्षण और तौल में अधिक समय लगता था। अतः आगे चलकर विद्वानों ने स्वर्ण या रजत पट्टियों को समान भार में काटकर उसका एक मानक मूल्य निर्धारित कर दिया। वैदिक–साहित्य में 'षतमान' या 'निष्क' नाम के इन्हीं सिक्कों का उल्लेख मिलता है[1]। ऋग्वेद में 'निष्क' षब्द का चार स्थानों पर उल्लेख हुआ है। ई0 थॉमस,[2] डी0 सी0 सरकार,[3] एस0 सी0 दास,[4] आदि प्रमुख इतिहासकार, ऋग्वेदीय निष्क को मुद्रा स्वीकार करते हैं, और इस प्रकार वे भारतीय मुद्रा का आरंभ ऋग्वेदीक काल से ही स्वीकार करते है।

भारत का सबसे प्राचीन पुरातात्त्विक प्रमाण सिक्कों का जो मिलता है, वह 'कार्षापण' का है। 'कार्षापण' लगभग सम्पूर्ण भारत के विभिन्न स्थलों की खुदाई से प्राप्त हुआ है। किन्तु एक बड़ी बात यह है कि 'कार्षापण' 'काहापण' और 'कहाण' नाम से बौद्ध–साहित्य में उल्लिखित यह सिक्का कहीं भी सोने का प्राप्त नहीं हुआ है। परंतु अधिकांष सिक्के चाँदी के

हैं, जिसकी तौल 56 ग्रेन से 58 ग्रेन है। ताँबे के सिक्के भी कम मात्रा में मिले हैं। कार्षापण सिक्कों को 'आहत' के नाम से भी जाना जाता है। कर्ष (रत्ती बीज) से तौलने के कारण कार्षापण नाम दिया गया तथा चिन्ह अंकित करने के कारण ये आहत सिक्के के नाम से भी जाने जाते हैं। भारत के प्राचीन स्थलों की खुदाई से चिन्हित सिक्के अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं। इन कार्षापण (पंचमार्क) सिक्कों के साथ एन0 बी0 पी0 वेयर के मिट्टी के बर्त्तनों के टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं। इनकी तिथि वैज्ञानिक पद्धति से ई0 पू0 600 वर्ष आँकी गई है। इसी के आधार पर कार्षापण भी उसी काल में प्रचलित समझे जाते है[5]।

कार्षापण सिक्कों का निर्माणकर्त्ता कौन था ? सिक्के किस अधिकारी की आज्ञा से तैयार किये जाते थे ? इस बात को लेकर विद्धानों में मतभेद हैं। मौर्यकाल से पूर्व भारत में कोई ऐसा साम्राज्य स्थापित नहीं था, जो इस दिषा में कार्य कर सकता था। देष की समृद्धि व्यापार पर निर्भर थी, तथा व्यापार की उन्नति सिक्कों पर। प्राचीन काल में व्यापार श्रेणी या निगम जैसी संस्थाओं के हाथ में थी। अतः वे ही लोग सिक्के तैयार करवाते थे। कालांतर में सिक्कों का निर्माण राजकीय अधिकार में आ गया[6]।

भारत की पावन भूमि पर बहुत सारे भारतीय रातवंषो का उदय हुआ। उन्होंने यहाँ वर्षो तक षासन किया। भारतीय राजवंषों के अतिरिक्त यहाँ बहुत सारे विदेषी षासकों ने यहाँ के षासकों को पराजित कर अपना आधिपत्त्य स्थापित किया तथा भारतीय राज्यसिंहासन पर आसिन हुए। इन विदेषी षासकों में भारतीय–यूनानी, षक–पह्ल्व एवं कुषाण राजवंष षामिल हैं। इन सब राजवंष के षासकों ने अपने राज्यकाल में सिक्कों का प्रचलन किया। परंतु इन सब राजवंषों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 'कुषाण वंष' के षासकों द्धारा प्रचलित सिक्कों को माना जाता है। इसके अतिरिक्त कुषाण वंषीय षासकों ने भारतीय–संस्कृति के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

कुषाण जाति यूह–ची की एक षाखा थी, जो मध्य–एषिया से आकर बल्ख के भू–भाग में ई0 पू0 द्वितीय सदी में बस गई थी। इस वंष का संस्थापक कुजुल कदफिसेस था। कुजुल कदफिसेस हिंदुकुष के पार उसने अपने साम्राज्य का विस्तार आरम्भ किया। उसने दक्षिणी अफगानिस्तान, काबुल, गांधार, किपिन और पार्थिया के एक भाग को अपने राज्य में मिला लिया और अंत में यवन, षक और पह्ल्व राज्य को आत्त्मसात कर अपने साम्रात्य का निर्माण किया। उसने इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने का सिक्का ही एक माध्यम है। कुजुल कदफिसेस की प्रारंभिक मुद्राओं पर 'कुषनस–यडस–कुजुलकफस–धुत–ठितस' उत्त्कीर्ण है। कुजुल कदफिसेस के पष्चात् उसका उत्तराधिकारी वीम कदफिसेस हुआ। वीम कदफिसेस ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया तथा प्रथम बार स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन करवाया। उसकी कुछ मुद्राओं पर महराज, सर्वलोकेष्वर तथा महेष्वर की उपाधि अंकित है। वह षैवमत को

माननेवाला था, इसका प्रमाण उसकी मुद्राओं पर द्विभाज, त्रिषुलधारी, व्याघ्रचर्मग्राही, नन्दी–अभिमुख, भगवान षिव की अंकित आकृतियों से मिलता है[7]।

वीम कदफिसेस के पष्चात् कनिष्क प्रथम कुषाण राजवंष के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। कनिष्क वंष का सुप्रसिद्ध एवं षक्तिषाली षासक सिद्ध हुआ। उसने अपना साम्राज्य मध्य–एषिया से वाराणसी तक विस्तृत किया। कनिष्क प्रथम के राज्यकाल में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटी। जिनमें षक–संवत की षुरूआत, गांधार–षैली का उदय एवं चतुर्थ–बौद्धसंगीति का आयोजन प्रमुख है। ऐसा माना जाता है कि कनिष्क बौद्धधर्म का अनुयायी था। परंतु अन्य धर्मों के प्रति भी वह उदार था। इस बात की पुष्टि उसके षासनकाल में प्रचलित मुद्राओं पर अंकित हिन्दु, बौद्ध, ग्रीक, ईरानी एवं पार्षियन देवी–देवताओं की आकृतियों से होती है[8]।

कुषाण सिक्के तौल में 121 ग्रेन, उसके दूगने या आधे तौल में तैयार होते रहें। कनिष्क के द्वारा प्रचलित सिक्कों की भी यही तौल थी[9]। कनिंघम तथा अन्य विद्धानों ने कनिष्क प्रथम की मुद्राओं के वर्गीकरण का प्रयास किया। प्रथम वर्ग के अंतर्गत स्वर्ण मुद्राओं तथा द्वितीय वर्ग में ताम्र मुद्राओं को रखा[10]।

कनिष्क प्रथम द्वारा प्रचलित स्वर्ण मुद्राओं पर ईरानी प्रभाव अधिक परिलक्षित होती है। इन मुद्राओं पर कनिष्क की आकृति 'ईरानी वेष' में उत्त्कीर्ण है जिसमें लम्बा कोट, पायजामा तथा लम्बी टोपी दीख पड़ती है। राजा अग्निकुण्ड में हविष डालते दिखाया गया है। स्वर्ण सिक्कों पर ईरानी उपाधि के साथ राजा का नाम भी अंकित है[11]।

कनिष्क प्रथम द्वारा प्रचलित ईरानी प्रभाव से ओत–प्रोत सिक्कों की चर्चा हम विस्तारपूर्वक इस प्रकार से कर रहे हैः–

वेदी और देव प्रकार–

वेदी और देव प्रकार के सिक्के के अग्रभाग पर राजा बायीं ओर खड़ा है। वह षिरस्त्राण, मुकुट, ईरानी ढंग का लम्बा कोट, पायजामा, टोपी तथा जूता पहने हुए है। दाहिने हाथ से वेदी पर आहुति दे रहे हैं। उनके कन्धों से लपटें निकल रही है। वह बायें हाथ में भाला पकड़े हुए है। ग्रीक लिपि और भाषा में लेख 'वैसिलियस बैसिलियान कनेष्को' उत्त्कीण है। इसी तरह अधिकांष सिक्को पर ग्रीक लिपि और षक भाषा में लेख 'षाओनानो षाओ कनेष्की कोषानो' उत्त्कीर्ण मिलते है[12]।

अरदोक्षो प्रकार

अरदोक्षो प्रकार के सिक्को के पृष्ठ भाग पर उत्त्कीर्ण देवी कि समता विद्धानों ने ईरानी भाग्यदेवी तथा भारतीय लक्ष्मीदेवी से करने का प्रयास किया है। ग्रीक लेख 'अरदोक्षो', दाहिनी

ओर स्त्री आकृति खड़ी है, देवी की आकृति वस्त्राभूषणों से सुसज्जित है, बायें हाथ में कार्नुकोपिया और दाहिने हाथ में पाष धारण किये है[13]।

अथसो प्रकार

अथसो प्रकार के सिक्के के पृष्ठभाग पर अंकित दाढ़ीयुक्त देव के तुलना विद्धानों ने ईरानी अग्निदेव से करने का प्रयास किया है। बायीं ओर एक दाढ़ीयुक्त देव की आकृति खड़ी है, मुकुट युक्त, दाहिने हाथ में माला और बायें हाथ में टाँग्स पकड़े हुए जो जाँच पर स्थित है। बायीं ओर कदफिस अंकित है, तथा ग्रीक लेख 'अथसो' उत्त्कीर्ण है[14]।

लुह्रस्प प्रकार

लुह्रस्प प्रकार के सिक्के के पृष्ठभाग पर उत्त्कीर्ण देवता की आकृति की तुलना विद्धानों ने ईरानी प्रकाष देवता से करने का प्रयास किया है। ग्रीक लेख 'लूरस्पो' मुकुट पहने हुए, दाहिनी ओर खड़ी दाढ़ीयुक्त देव की आकृति है, दाहिने हाथ में माला धारण किए हुए है और बायीं ओर कदफिस चिन्ह अंकित है। देव के निकट घोड़े की आकृति भी लक्षित होती है[15]।

मिहिर प्रकार

मिहिर प्रकार के सिक्कों पर अंकित देव की समता विद्धानों ने ईरानी सूर्य–देव मिथ से करने का प्रयास किया हैं। ग्रीक लेख में 'मेइपो' उत्त्कीर्ण है, देव बायीं ओर खड़े है। देवता की आकृति आभा–मण्डलयुक्त है, मुकुटमय, दाहिना हाथ में राजदण्ड धारण किए हुए है, और कमर में तलवार, कदफिस चिन्ह अंकित है। इस प्रकार के सिक्कों को दो वर्गों में बाँटा गया है। दूसरे वर्ग के सिक्के में ग्रीक लेख 'मीपो' बायीं ओर खड़ी देवाकृति, दाहिना हाथ आगे की ओर बढ़ा हुआ तथा बायाँ जाँघ पर स्थित है। तलवार कमर में बंधी है, और कदफिस चिन्ह अंकित है[16]।

इन सब सिक्कों के अतिरिक्त कनिष्क प्रथम के द्धारा अन्य बहुत से प्रकार के सिक्के है। जिनमें मनोबगो प्रकार, हिफेस्ट प्रकार, बोदो प्रकार जो बौद्धधर्म से संबंधित है, ओरलग्नों प्रकार जो पार्षियन युद्ध–देव एवं फर्रो प्रकार जो पार्षियन अग्निदेव से संबंधित है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि कनिष्क प्रथम के काल में प्रचलित सिक्के भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते है। कनिष्क ने हिन्दू, बौद्ध, ग्रीक, ईरानी एवं पार्षियन आदि देवी–देवताओं के चित्रों को अपने सिक्कों पर अंकित कर अपने धर्म–सहिष्णुता का परिचय दिया। कनिष्क के स्वर्ण सिक्कों पर ईरानी प्रभाव अधिक परिलक्षित होते है। जिनके कई प्रकार जैसे अथसो, अरदोक्षो, लुहस्प, मिहिर आदि सिक्कों के उदाहरण हमारे समक्ष उपलब्ध है। ये

सिक्के कला कि दृष्टि से प्राचीन भारतीय सिक्कों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसके साथ ही ये सिक्के तत्त्कालीन वैदेषिक संबंधो के उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. ओझा, रामप्रकाष; प्राचीन सिक्के, पृ0–2
2. ई0 थामस; एन्षियेन्ट इण्डियन वेट, पृ0–34
3. भण्डाकर, डी0 आर0; लेक्चर्स आन एन्षियेन्ट इण्डियन न्युमिस्मेटिक,1921
4. दास, ए0 सी0; ऋग्वेदिक इण्डिया, पृ0–140, 1925
5. उपाध्याय, डॉ0 वासुदेव; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0–9
6. वहीं, पृ0–43
7. चौधरी, राधकृष्ण; प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ0–198
8. उपाध्याय, डॉ0 वासुदेव; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0–107
9. वहीं
10. पाण्डेय, डॉ0 विमलेष कुमार; भारतीय पुरातत्त्व के मूल तत्त्व, पृ0–68
11. उपाध्याय, डॉ0 वासुदेव; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0–107
12. ओझा, रामप्रकाष; प्राचीन सिक्के, पृ0–64
13. वहीं, पृ0–65
14. वहीं, पृ0–64
15. ओझा, रामप्रकाष; प्राचीन सिक्के, पृ0–64
16. वहीं